15 अव्यया:

2/11/16

जिन पदों में लिंग, वचन, पुरुष अथवा विभक्ति के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता है, जो पद हमेशा एक ही रूप में रहते हैं वे **अव्यय** पद कहलाते हैं, जैसे—कुत्र, तदा, अत्र, तत्र, अधुना। अव्यय पद कालवाची, स्थानवाची, प्रश्नवाची, क्रियाविशेषण, समुच्चयबोधक आदि होते हैं।

1. कालवाची अव्यय—ऐसे शब्द जिनसे किसी घटना के समय का बोध होता है, **कालवाची अव्यय** कहलाते हैं, जैसे—

1. **अद्य**	=	आज।	**अद्य** विद्यालये वार्षिकोत्सवः अस्ति।
2. **ह्यः**	=	बीता हुआ कल।	**ह्यः** मम मित्रम् मुम्बईनगरं अगच्छत्।
3. **श्वः**	=	आने वाला कल।	**श्वः** अहम् श्रीनगरे भविष्यामि।
4. **परश्वः**	=	परसो।	**परश्वः** मम मित्रम् आगमिष्यति।
5. **कदा**	=	कब।	त्वम् नाटकं द्रष्टुम् **कदा** गमिष्यसि? **(प्रश्नवाचक भी है)**
6. **यदा-तदा**	=	जब-तब।	**यदा** वसन्तागमनं भवति **तदा** कोकिलः कूजति।
7. **अधुना**	=	अब।	**अधुना** त्वं पठ।
8. **इदानीम्**	=	इस समय।	**इदानीम्** अहम् कार्यं करिष्यामि।
9. **सम्प्रति**	=	अब, इस समय।	**सम्प्रति** सः न आगमिष्यति।
10. **सदा-सर्वदा**	=	हमेशा।	त्वं **सदा** सत्यं वद।
11. **पुरा**	=	पहले।	**पुरा** चन्द्रगुप्तः नाम सम्राट् अभवत्।

2. स्थानवाची अव्यय—जिन शब्दों से यहाँ-वहाँ आदि स्थान का ज्ञान होता है, **स्थानवाची अव्यय** कहलाते हैं।

1. **अत्र**	=	यहाँ।	**अत्र** बालकाः प्रतिदिनं कन्दुकेन क्रीडन्ति।
2. **तत्र**	=	वहाँ।	**तत्र** वृद्धाः अपि प्रतिदिनं भ्रमन्ति।
3. **कुत्र**	=	कहाँ।	त्वं **कुत्र** गच्छसि?
4. **सर्वत्र**	=	सब जगह।	ईश्वरः **सर्वत्र** अस्ति।
5. **यत्र-तत्र**	=	जहाँ-तहाँ।	**यत्र** पुस्तकालयः **तत्र** पाठकाः।
6. **कुतः**	=	कहाँ से।	पुष्पैः विना उपवनस्य शोभा **कुतः**?
7. **इतः**	=	यहाँ से, इधर से।	त्वम् **इतः** कुत्र गमिष्यसि?
8. **इतस्ततः**	=	इधर-उधर।	उद्याने वृक्षेषु खगाः **इतस्ततः** उत्पतन्ति।
9. **नीचैः**	=	नीचे।	नद्याः जलम् स्वतः **नीचैः** प्रवहति।

Scanned with CamScanner

10. अधः	= नीचे।	वृक्षस्य **अधः** वानरः तिष्ठति।
11. उपरि	= ऊपर।	शिलायाः **उपरि** नृपः उपाविशत्।
12. बहिः	= बाहर।	पुत्र! गृहात् **बहिः** मा क्रीड, तत्र वर्षा भवति।
13. अन्यत्र	= दूसरी जगह।	त्वं **अन्यत्र** कुत्र गमिष्यसि?
14. उभयतः	= दोनों ओर।	विद्यालयं **उभयतः** वृक्षाः सन्ति।
15. परितः	= चारों ओर।	अध्यापकं **परितः** छात्राः सन्ति।
16. सर्वतः	= सब ओर, चारों ओर।	देवालयं **सर्वतः** उद्यानानि सन्ति।

3. प्रश्नवाची अव्यय—ऐसे शब्द जो वाक्य में प्रयोग करने पर प्रश्नवाचक के रूप में प्रयोग किए जाएँ, **प्रश्नवाची अव्यय** कहलाते हैं।

1. कुत्र	= कहाँ।	अनिमेषः **कुत्र** अस्ति?
2. किमर्थम्	= किसलिए।	त्वम् **किमर्थम्** विद्यालयं गच्छसि?
3. कुतः	= कहाँ से।	छात्राः **कुतः** आगच्छन्ति?
4. कदा	= कब।	मयूराः **कदा** नृत्यन्ति?
5. कति	= कितने।	त्वम् **कति** वादने विद्यालयं गच्छसि?
6. कथम्	= कैसा।	कच्छपः **कथम्** चलति?

4. क्रियाविशेषण—ऐसे शब्द जो क्रिया की विशेषता बताते हैं, **क्रियाविशेषण** कहलाते हैं।

1. शनैः शनैः	= धीरे-धीरे।	वृद्धाः **शनैः शनैः** चलन्ति।
2. शीघ्रं	= जल्दी।	**शीघ्रं** कार्यं कुरु।
3. तीव्रम्	= तेज़।	अश्वाः **तीव्रम्** धावन्ति।
4. अकस्मात्	= अचानक।	**अकस्मात्** वर्षा अभवत्।
5. अचिरम्	= शीघ्र, तुरन्त।	**अचिरम्** आगच्छ।
6. अथ	= तब, फिर।	**अथ** रामायणकथा प्रारम्भयते।
7. उच्चैः	= ऊँचा, ज़ोर से।	पाश्चात्यगायकाः प्रायः **उच्चैः** गायन्ति।
8. पुनः	= फिर।	इदं कार्यं **पुनः** कुरु।
9. मन्दं मन्दं	= धीरे-धीरे।	पवनः **मन्दं-मन्दं** वहति।
10. तूष्णीम्	= चुपचाप।	छात्राः कथायाम् **तूष्णीम्** तिष्ठन्ति।
11. मुहुर्मुहः	= बार-बार।	बालकः **मुहुर्मुहः** पतति।
12. सम्यक्	= भाँति, सही।	**सम्यक्** दृष्ट्वा मार्गे गन्तव्यम्।
13. मृषा	= झूठ।	त्वं **मृषा** मा वद।

Scanned with CamScanner

5. समुच्चयबोधक—दो या अधिक शब्दों अथवा वाक्यों को जोड़ने के अर्थ में जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, वे **समुच्चयबोधक अव्यय** कहलाते हैं।

1. च = और। सीता गीता **च** पठतः।
2. अपि = भी। त्वम् **अपि** पठनाय गच्छ।
3. तु = तो। सः **तु** अगच्छत् त्वम् अपि क्रीडनाय गच्छ।
4. प्रत्युत = बल्कि। परागः क्रीडाप्रतियोगितायां न तु उत्तीर्णोऽभवत् **प्रत्युत** सः प्रथमस्थानम् प्राप्य पारितोषकं अलभत्।

6. युग्म अव्यय—जो अव्यय एक ही वाक्य में जोड़े में प्रयोग किए जाते हैं, **युग्म अव्यय** कहलाते हैं।

1. यदि-तर्हि = अगर-तो। **यदि** अहम् कृष्णवर्णः **तर्हि** रामस्य वर्णः कीदृश?
2. यावत्-तावत् = जबतक-तबतक। **यावत्** अहम् ईश्वरं भजामि **तावत्** त्वम् अत्र एव तिष्ठ।
3. यथा-तथा = जैसा-वैसा। **यथा** राजा **तथा** प्रजा।
4. यतः-ततः = जहाँ से-वहाँ से। **यतः** अहम् फलानि आनयामि **ततः** एकं फलम् त्वम् अपि आनय।
5. यत्र-तत्र = जहाँ-वहाँ। **यत्र** कृष्णमेघाः **तत्र** वृष्टिः।
6. यदा-तदा = जब-तब। **यदा** मेघाः गर्जति **तदा** मयूराः नृत्यन्ति।

अभ्यासार्थ

अधोलिखितअव्ययेषु उचितेन अव्ययेन रिक्त-स्थानानि पूरयत—

(क) शनैः, इतस्ततः, अपि, विना, बहिः उच्चैः, अत्र, एव, अधुना, मा

1. विद्यां .... जीवनं शून्यम्।
2. विद्यालयात् .... वृक्षाः सन्ति।
3. वृद्धाः .... चलति।
4. सिंहाः .... गर्जन्ति।
5. .... त्वम् पठ।
6. मृषा .... वद।
7. आधुनिक शिक्षा पद्धतौ संगणकस्य शिक्षणम् .... आवश्यकम्।
8. भिक्षुकः भिक्षायै .... भ्रमति।
9. हे ईश्वर! त्वम् .... मम रक्षकः।
10. .... रजतः न वसति।

(ख) **यथा-तथा, यदि-तर्हि, यत्र-तत्र, यदा-तदा यावत्-तावत्, ह्यः, अद्य, श्वः, अपि, सर्वत्र**

1. उद्याने .... पुष्पाणि सन्ति।
2. अहम् .... श्रीनगरं भविष्यामि।
3. .... अस्माकं विद्यालये वार्षिकोत्सवः अभवत्।
4. .... अहम् कृष्णवर्णः .... श्रीवासुदेवस्य वर्ण कीदृशः?
5. .... बीजं .... फलम्।

Scanned with CamScanner